# वागड़ क्षेत्र का भौगोलिक अध्ययन

*सुनिल कुमार

**शोध सारांश**

राजस्थान के दक्षिणाँचल में स्थित वागड़ अपनी प्राचीन संस्कृति के लिये विश्व विख्यात है। उबड़–खाबड़ पथरीली पहाड़ियों वाला यह प्रदेश कश्यप मुनि की तपों स्थली, सोम माही जाखम नदियों का त्रिवेणी संगम वेणेश्वर, जन–जातीय संस्कृति की अद्‌भूत मिशाल प्रस्तुत करता है। भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र गुजरात और मध्यप्रदेश की सीमाओं से सटा है वागड़ क्षेत्र प्राकृतिक सम्पदा कलात्मक वैभव, रहन–सहन, वेशभूषा आदि समर्ध और सम्पन्न है। यहां की भौगोलिक स्थिति ने वागड़ के इतिहास और संस्कृति को भी प्रभावित किया है। प्रस्तुत शोध पत्र वागड़ की भौगोलिक स्थिति के विश्लेषणात्मक अध्ययन की ओर इंगित है।

**शोध आलेख**

राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। साहस और वीरता के लिए प्रसिद्ध, आन–बान और शान के लिए मर मिटने वाले रणबांकुरों की जन्म भूमि है। इसी राज्य के दक्षिणांचल में बाँसवाड़ा एवं डूँगरपुर स्थित हैं, जो स्वतंत्रता पूर्व 'वागड़ क्षेत्र' के नाम से जाना जाता था। गुजरात में 'वागड़' का अर्थ 'जंगल' होता है। प्राचीन काल में यह क्षेत्र घने वनों से आच्छादित था, इसी कारण इस क्षेत्र का नाम वागड़ पड़ा।

बाँसवाड़ा जिला वागड़ (प्राचीन डूँगरपुर राज्य) का पूर्वी हिस्सा है। कुछ लोग इसका अर्थ बाँस झाड़ी से रक्षित स्थान बताते हैं। कहा जाता है कि पहले यहाँ बाँसों की झाड़ियाँ थीं और अब भी इसके समीपवर्ती प्रदेश में बाँसों की प्रचुरता है, इसी कारण इस कस्बे का नाम बाँसवाड़ा पड़ा।

वागड़ क्षेत्र का दूसरा हिस्सा डूँगरपुर जिला है। डूँगर का अर्थ होता हैं पहाड़। डूँगरपुर कस्बे के निकट डूँगर होने के कारण डूँगरपुर कहलाया। बाँसवाड़ा व डूँगरपुर (वागड़ क्षेत्र) का भौगोलिक परिवेश आश्चर्यजनक विभिन्नताएँ प्रस्तुत करता है। इस क्षेत्र की भौगोलिक संरचना ने कला व स्थापत्य के क्षेत्र को प्रत्यक्षतः प्रभावित किया है। नदियों से प्रोत्साहन देता है।

**बाँसवाड़ा की स्थिति एवं क्षेत्रफल**

बाँसवाड़ा जिला (वागड़) राजस्थान के दक्षिणी भाग $23^0 3'$ और $23^0 55'$ उत्तरी अक्षांश तथा $73^0 58'$ और $74^0 47'$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है। इसका क्षेत्रफल (1946 वर्गमील) 5,076.99 वर्ग किलोमीटर है।

**सीमा**

बाँसवाड़ा के उत्तर में प्रतापगढ़, उदयपुर और डूँगरपुर, पश्चिम में डूँगरपुर और सौंथ (संतरामपुर), दक्षिण में (ब्रिटिश भारत) के पंचमहल का झालोद परगना, झाबुआ और इंदौर राज्य के पेटलावद परगने का कुछ अंश, पूर्व में सैलाना, रतलाम और प्रतापगढ़ राज्यों के अंश हैं। उत्तर से दक्षिण तक लंबाई लगभग 58 मील और पूर्व से पश्चिम तक अधिक से अधिक चौड़ाई अनुमानतः 50 मील है, जिस कारण जिले की आकृति चतुष्कोणीय लगती है।

**डूँगरपुर : स्थिति एवं क्षेत्रफल**

वागड़ प्रदेश का दूसरा भाग डूँगरपुर जिला राजस्थान के दक्षिणी भाग में दक्षिणी भाग $23^0 20'$ और $24^0 01'$ उत्तरी अक्षांशों के बीच तथा $73^0 22'$ और $74^0 23'$ पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है तथा इसका क्षेत्रफल 3,770 वर्ग किलोमीटर है।

**सीमा**

इसके उत्तर में उदयपुर जिला, पूर्व में बाँसवाड़ा जिला तथा दक्षिण और पश्चिम में गुजरात प्रांत की सीमाएँ मिलती हैं।

**पर्वत श्रेणी**

गुजरात, राजस्थान और मध्यप्रदेश राज्य के संगम स्थल पर अवस्थित पर्वत श्रेणी एवं बाँसवाड़ा का मध्यवर्ती तथा पश्चिमी भाग खुला मैदान है, जो उपजाऊ है, किन्तु दक्षिण और पूर्व के हिस्से पहाड़ी हैं। इस प्रदेश में पहाड़ियाँ बहुधा उत्तर से दक्षिण की ओर चली गई हैं, जो 1300 से 1700 फुट तक ऊँची हैं। कुशलगढ़ से 6 मील उत्तर की एक पहाड़ी 1988 फुट ऊँची है।

**नादियाँ :**

वागड़ (बाँसवाड़ा) प्रदेश की मुख्य नदी माही है, जो बहुधा साल भर बहती है।

**माही :**

इस नदी का निकास ग्वालियर राज्य के आमझरा परगने से है। यह ग्वालियर, धार, झाबुआ, रतलाम और सैलाना राज्यों में बहती हुई राजपूताना में प्रवेश कर, दो मील तक रतलाम और बाँसवाड़ा की सीमा बनाकर पूर्व में खांदू के पास बाँसवाड़ा राज्य में प्रवेश करती है और अनुमानतः 40 मील उत्तर में बहती हुई उदयपुर और डूँगरपुर राज्य की सीमा तक चली जाती है। वहाँ से यह पश्चिम में मुड़कर बाँसवाड़ा और डूँगरपुर राज्यों की सीमा पर बहती हुई गुजरात के महीकांठ, रेवा कांठा राज्यों में प्रवेश कर खंभात की खाड़ी में जा गिरती है। बाँसवाड़ा तथा उसी सीमा के आस–पास इसका बहाव करीब 100 मील है। माही वागड़ प्रदेश की गंगा है। यह गंगा के समान ही पवित्र व पूजनीय है।

**अनास :**

यह नदी मध्य भारत से निकलती है और बाँसवाड़ा जिले में प्रवेश कर उत्तर और उत्तर पश्चिम में 38 मील बहकर पिपलाय गाँव के निकट माही में मिल जाती है।

**हिरन :**

यह नदी बाँसवाड़ा जिले की दक्षिणी–पूर्वी पहाड़ियों से निकलती है और उत्तर तथा उत्तर पश्चिम में बहती हुई लिलवानी गाँव के निकट अनास में जा गिरती है। इसके तट बहुत ऊँचे नहीं हैं, जिससे इसका पानी खेती में काम आता है।

**एरो (एराव) :**

यह नदी प्रतापगढ़ से निकलती है। सेमलिया गाँव के पास इस जिले में प्रवेश करने के उपरांत यह उधर की

पहाड़ियों का जल लेती हुई दक्षिण–पश्चिम में 30 मील बहकर माही में मिलती है। इसका जल खेती में सहायक है।

**चाप :**

यह नदी कलिंजरा के उत्तर–पूर्व की पहाड़ियों से निकलती है और उत्तर तथा पश्चिम में बहती हुई गढ़ी से उत्तर–पश्चिम में माही में जा गिरती है। नागदी, कागदी और कलोल इसके सहायक नाले हैं। इसका बहाव करीब 38 मील है और इसका जल खेती के काम में आता है।

**सोम :**

यह नदी दूंगरपुर क्षेत्र की महत्वपूर्ण नदी है। इस नदी के किनारे कितने ही ऐतिहासिक युद्ध हुए हैं। इस नदी के किनारे ही प्रसिद्ध देव सोमनाथ मंदिर स्थित है।

**जलवायु :**

वागड़ प्रदेश के बाँसवाड़ा जिले की जलवायु उत्तर–पश्चिम में रेगिस्तानी प्रदेशों की जलवायु की अपेक्षा बहुत नम है, फिर भी गर्मियों में अधिकतम तापमान 46 डिग्री तक पहुँच जाता है। मई का महीना सर्वाधिक गर्म होता है। सर्दियों में काफी ठण्ड होती है तथा तापमानी का पारा हिमांक से नीचे चला जाता है। जिले में वर्षा का वार्षिक औसत 922. 4 मिलीमीटर है। औसत आर्द्रता 62.6 प्रतिशत रहती है। मानसून के महीनों में तथा अक्टूबर माह में चक्रवर्ती हवाएँ, आँधियाँ तूफान आदि आते हैं।

वागड़ के दूसरे हिस्से डूंगरपुर जिले की जलवायु शुष्क है, किन्तु ग्रीष्मकाल में यहाँ का मौसम राजस्थान के रेगिस्तानी क्षेत्र की अपेक्षा ठण्डा रहता है। जिले में वर्षा का वार्षिक औसत 76.10 सेन्टीमीटर है। मई का महीना सबसे गर्म होता है, तापमान 43 डिग्री तक पहुँच जाता है। शीतकाल में दैनिक तापमान 9 डिग्री तक उतर जाता है।

**वनस्पति :**

वागड़ प्रदेश में आधे से अधिक भाग में जंगल हैं। यहाँ के पर्वतीय ढलानों पर टीक के जंगल हैं। टीक अर्थात् सागवान भारतीय जंगलों का राजा कहा जाता है। पहले मैदानी क्षेत्रों में भी घने जंगल थे, किन्तु आजादी के बाद इतनी तेजी से कटाई हुई, कि मैदानी क्षेत्रों से जंगल समाप्त हो गए। वागड़ प्रदेश (बाँसवाड़ा/ दूंगरपुर) में अब तो महुआ के पेड़ केवल खेतों में ही देखने को मिलते हैं, किन्तु किसी समय इनके विशाल जंगल मौजूद थे।

इन वनों में महुआ, ढाक, धव, कदम्ब, पीपल, हल्दू, सालर, बड़, इमली, बबूल, आबनूस, तथा शीशम के वृक्ष भी हैं। बाँस पहाड़ों पर व खजूर के वृक्ष तर जमीन में पाये जाते हैं। रियासती काल में वनों से शहद, मोम, गोंद, लाख तथा घास की अच्छी उपज मिलती थी।

**पशु–पक्षी :**

वागड़ प्रदेश के जंगलों में बाघ, चीता, भेड़िया, रीछ, सुअर, साँभर, चीतल, हिरण, नीलगाय, जरख, भेड़ला (चार सिंगवाला हिरण), सियार, लोमड़ी तथा खरगोश आदि पशु हैं, लेकिन वर्तमान में बाघ लुप्त प्रायः हो गया है। गिलहरी, गिरगिट, छिपकलियाँ, गोहन, साँप आदि भी जंगलों में पाये जाते हैं। पक्षियों में मोर, तोता, कोयल, तीतर, कबूतर, बटेर, हरियल, चील, कौआ, गिद्ध, शिकारा, बाज, जंगली मुर्ग, सारस, बगुला, टिटहरी, बत्तख आदि पक्षी तथा जलचरों में कछुआ, घड़ियाल, जलमुर्ग अनेक प्रकार की मछलियाँ तथा केकड़ा आदि पाए जाते हैं।

**खनिज :**

वागड़ प्रदेश के दूंगरपुर जिले में घीया पत्थर, अयस्क, माइका, मैंग्नीजसाइट, काइनाईट, एस्बेस्ट्रॉस, फ्लोराइट तथा शीशा और बाँसवाड़ा जिले में मैंग्नीज, चूना पत्थर, इमारती पत्थर, सीसा, जस्ता, लौह, अयस्क, ग्रेफाइट तथा माइका आदि खनिज पदार्थ प्राप्त होते हैं।

**जनसंख्या :**

2011 की जनगणना के अनुसार बाँसवाड़ा की जनसंख्या 17,97485 और डूंगरपुर की 13,88,552 है।

**धर्म :**

इस क्षेत्र में हिन्दू, जैन, इस्लाम व ईसाई धर्म प्रचलित हैं।

**जातियाँ :**

वागड़ (बाँसवाड़ा व डूंगरपुर) में भील व मीणा जाति की गणना आदिम जातियों के रूप में की जाती है। इनकी संख्या सबसे अधिक है। इसके अलावा हिन्दुओं की ब्राह्मण, राजपूत, महाजन, कायस्थ, सुनार, दर्जी, कुम्हार आदि सभी जातियाँ विद्यमान हैं।

**भाषा व लिपि :**

यहाँ की प्रधान भाषा वागड़ी है, जो गुजराती से अधिक संबंध रखती है। इसकी लिपि नागरी है।

**वेश–भूषा :**

वागड़ में सामान्य पोशाक पगड़ी, कुरता, लंबा अंगरखा और धोती है। ग्रामीण एवं भील आदि पगड़ी के स्थान पर पोतिया (मोटा वस्त्र) बाँधते हैं और कमर तक छोटा अंगरखा पहनते हैं। आजकल साफे तथा टोपी का प्रचार भी बढ़ने लगा है। स्त्रियों की पोशाक में । घाघरा, साड़ी और चोली मुख्य है।

***सहायक आचार्य**
**भूगोल विभाग**
**श्री परमहंस स्वामी माधवानन्द महाविद्यालय,**
**जाड़न, पाली (राज.)**

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची**

1. कौशिक एच. डी. मानव भूगोल
2. भल्ला, एल. आर. राजस्थान भूगोल
3. हुसैन माजिद मानव भूगोल
4. अग्रवाल वासुदेवशरण : शिव महादेव दि. गोड, वेद अकादमी, वाराणसी, 1966
5. अग्रवाल वासुदेव शरण : दि ग्लोरी फिकेशन ऑफ दि ग्रेड गोडेस
6. आचार्य बलदेव उपाध्याय : संस्कृत साहित्य का इतिहास, शारदा निकेतन, वाराणसी दशम् संस्करण, 1997
7. अग्रवाल प्रो. मथुरा प्रसाद : वागड़ और उसका साहित्य, वागड़ प्रदेश साहित्य परिषद् डूँगरपुर 1 सं. 1966
8. बैनर्जिया, पौराणिक एंड तांत्रिक रिलीजीयन, कलकत्ता विश्वविद्यालय 1972, 1966